Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 05 भाग 09, (फरवरी, 2026)
पृष्ठ संख्या 65–66

महिला कृषकों द्वारा श्री अन्न प्रसंस्करण एवं उत्पाद विकास

रंजना कुमारी, संगीता देव, रूबी प्रांजना तामुली एवं प्रीति कुमारी

सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर (बिहार), भारत।

Email Id: – kumariranjanaaicrp@gmail.com

परिचय

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहाँ महिलाओं की भूमिका खेती से लेकर कटाई, सफाई, भंडारण एवं विपणन तक अत्यंत महत्वपूर्ण है। हाल के वर्षों में श्री अन्न (मिलेट्स/मोटे अनाज) को पुनः लोकप्रियता मिली है, क्योंकि ये पोषण से भरपूर, जलवायु सहनशील तथा स्वास्थ्यवर्धक हैं। महिला कृषकों के लिए श्री अन्न का प्रसंस्करण एवं उत्पाद विकास न केवल आय बढ़ाने का साधन है, बल्कि यह उनके सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम भी है। श्री अन्न के अंतर्गत ज्वार, बाजरा, रागी, कंगनी, कोदो, कुटकी, सांवा आदि मोटे अनाज शामिल हैं। इन अनाजों का प्रसंस्करण करके महिलाएँ विभिन्न मूल्य संवर्धित उत्पाद तैयार कर सकती हैं, जैसेकृआटा, सूजी, दलिया, फ्लेक्स, रेडी–टू–कुक मिक्स, बिस्कुट, लड्डू, नमकीन, पापड़, खाखरा आदि। इन उत्पादों की बाजार में निरंतर मांग बढ़ रही है, क्योंकि उपभोक्ता अब स्वास्थ्य के प्रति अधिक जागरूक हो रहे हैं। प्रसंस्करण की प्रक्रिया में सफाई, ग्रेडिंग, छिलका उतारना, पीसना, पैकेजिंग एवं भंडारण जैसे चरण शामिल होते हैं। यदि महिला कृषकों को इन प्रक्रियाओं का उचित प्रशिक्षण दिया जाए, तो वे घर या गाँव स्तर पर ही छोटे–छोटे प्रसंस्करण इकाइयाँ स्थापित कर सकती हैं। इससे न केवल श्रम की बचत होती है, बल्कि समय और लागत में भी कमी आती है। उत्पाद विकास के माध्यम से महिलाएँ स्थानीय स्वाद और उपभोक्ता की पसंद के अनुसार नए–नए उत्पाद तैयार कर सकती हैं। जैसे बच्चों के लिए पौष्टिक स्नैक्स, बुजुर्गों के लिए सुपाच्य खाद्य पदार्थ तथा कार्यरत लोगों के लिए रेडी–टू–ईट उत्पाद। इससे महिलाओं की रचनात्मकता को बढ़ावा मिलता है और उन्हें उद्यमिता के नए अवसर प्राप्त होते हैं। सरकार द्वारा महिला कृषकों के लिए विभिन्न योजनाएँ एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं, जैसे स्वयं सहायता समूह , कृषि विज्ञान केंद्र के प्रशिक्षण, स्टार्टअप एवं सूक्ष्म उद्योग योजनाएँ। इनका लाभ उठाकर महिलाएँ श्री अन्न आधारित उद्यम शुरू कर सकती हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि महिला कृषकों द्वारा श्री अन्न का प्रसंस्करण एवं उत्पाद विकास ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने के साथ–साथ महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह पहल पोषण सुरक्षा, रोजगार सृजन एवं सतत कृषि विकास की दिशा में कुछ जरूरी बातें–

1. **कच्चे माल की गुणवत्ता**
   - ❖ साफ, सूखा और कीट–मुक्त अनाज का चयन
   - ❖ नमी प्रतिशत कम होना चाहिए
   - ❖ स्थानीय एवं मौसमी श्री अन्न का उपयोग
2. **स्वच्छता एवं खाद्य सुरक्षा**
   - ❖ कार्य स्थल की साफ–सफाई
   - ❖ हाथ धोना, साफ बर्तन व उपकरण
   - ❖ FSSAI जैसे खाद्य सुरक्षा मानकों की जानकारी
3. **उपयुक्त प्रसंस्करण तकनीक**
   - ❖ सफाई, छिलका उतारना, पीसना सही तरीके से
   - ❖ कम लागत वाली मशीनों का उपयोग
   - ❖ समय व श्रम की बचत
4. **उत्पाद का चयन**
   - ❖ बाजार मांग के अनुसार उत्पाद

- ❖ रेडी–टू–कुक और रेडी–टू–ईट उत्पाद
- ❖ बच्चों, बुजुर्गों और मधुमेह रोगियों के अनुकूल उत्पाद

5. **पैकेजिंग एवं भंडारण**
   - ❖ नमीरोधी और मजबूत पैकेट
   - ❖ सही लेबलिंग (नाम, वजन, तिथि)
   - ❖ ठंडी व सूखी जगह में भंडारण
6. **गुणवत्ता नियंत्रण**
   - ❖ स्वाद, रंग, सुगंध की जांच
   - ❖ समान गुणवत्ता बनाए रखना
   - ❖ खराब उत्पाद अलग करना
7. **उत्पाद का चयन**
   - ❖ बाजार मांग के अनुसार उत्पाद
   - ❖ रेडी–टू–कुक और रेडी–टू–ईट उत्पाद
   - ❖ बच्चों, बुजुर्गों और मधुमेह रोगियों के अनुकूल उत्पाद
8. **पैकेजिंग एवं भंडारण**
   - ❖ नमीरोधी और मजबूत पैकेट
   - ❖ सही लेबलिंग (नाम, वजन, तिथि)
   - ❖ ठंडी व सूखी जगह में भंडारण
9. **गुणवत्ता नियंत्रण**
   - ❖ स्वाद, रंग, सुगंध की जांच
   - ❖ समान गुणवत्ता बनाए रखना
   - ❖ खराब उत्पाद अलग करना
   - ❖ लागत एवं लाभ विश्लेषण
10. **कच्चा माल, श्रम व पैकेजिंग लागत**
    - ❖ उचित मूल्य निर्धारण
    - ❖ लाभ प्रतिशत तय करना
11. **विपणन एवं ब्रांडिंग**
    - ❖ स्थानीय हाट, मेले, स्कूल, आंगनवाड़ी
    - ❖ स्वयं सहायता समूह के माध्यम से बिक्री
    - ❖ आकर्षक ब्रांड नाम व लोगो
12. **समूह में कार्य**
    - ❖ SHG या FPO से जुड़ना
    - ❖ कार्य का बंटवारा
    - ❖ सामूहिक निर्णय
13. **प्रशिक्षण एवं कौशल विकास**
    - ❖ KVK प्रशिक्षण लेना
    - ❖ नई तकनीक सीखना
    - ❖ नियमित अभ्यास

भारत सरकार ने मिलेट्स को बढ़ावा देने के लिए अनेक योजनाएँ प्रारंभ की हैं

1. **राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन–** मिलेट्स उत्पादन बढ़ाने, बीज वितरण और किसानों को तकनीकी प्रशिक्षण देने का कार्य किया जा रहा है।
2. **प्रधानमंत्री किसान सम्पदा योजना और FPOs –** मिलेट प्रोसेसिंग यूनिट्स, वैल्यू एडिशन और ब्रांडिंग के लिए सहायता।
3. **ICAR और राज्य कृषि विश्वविद्यालयों की भूमिका:** वैज्ञानिक शोध, बेहतर किस्मों का विकास और प्रसंस्करण तकनीकों का प्रशिक्षण।
4. **मध्यप्रदेश, कर्नाटक, राजस्थान, तेलंगाना जैसे अग्रणी राज्य:** राज्य स्तर पर "श्री अन्न मिशन" और "मिलेट हब" जैसी योजनाएं शुरू की गई हैं।

श्री अन्न और पोषण क्रांति : स्वस्थ भारत की ओर

भारत में कुपोषण, एनीमिया और मोटापे जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं। ऐसे में मिलेट्स एक प्राकृतिक समाधान हैं। **पोषण विशेषज्ञ बताते हैं कि नियमित आहार में श्री अन्न शामिल करने से** भारत में कुपोषण, एनीमिया और मोटापे जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं। ऐसे में मिलेट्स एक प्राकृतिक समाधान हैं। पोषण विशेषज्ञ बताते हैं कि नियमित आहार में श्री अन्न शामिल करने से –

- ➢ पाचन शक्ति में सुधार
- ➢ रक्त शर्करा (ब्लड शुगर) का नियंत्रण
- ➢ मोटापा और हृदय रोग के खतरे में कमी
- ➢ बच्चों और गर्भवती महिलाओं में पोषण की पूर्ति होती है।
- ➢ इसीलिए अब स्कूल मिड–डे मील, आंगनवाड़ी, और पब्लिक डिस्ट्रीब्यूशन सिस्टम (PDS) में भी मिलेट्स को शामिल किया जा रहा है।
- ➢ **निर्यात और वैश्विक पहचान:** 'सुपरफूड' के रूप में मिलेट्स
- ➢ भारत विश्व का सबसे बड़ा मिलेट उत्पादक देश है।
- ➢ कुल वैश्विक उत्पादन का लगभग 20 प्रतिशत हिस्सा भारत से आता है।
- ➢ 2023 में अंतरराष्ट्रीय वर्ष घोषित होने के बाद भारतीय मिलेट्स की मांग अमेरिका, यूरोप, जापान और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में बढ़ी है।
- ➢ कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण के अनुसार भारत का मिलेट निर्यात 2022–23 में लगभग ₹600 करोड़ तक पहुंच गया, जो पिछले वर्षों की तुलना में लगभग दोगुना है।